क्षत्रिय वंश गौरव

मर्यादा पुरूषोत्तम
श्री राम

क्षत्रिय सम्राट
महावीर महाराणा प्रताप

परमवीर
बाबू वीर कुंवर सिंह

''चार हुतासन सों भये कुल छत्तिस वंश प्रमाण
भौमवंश से धाकरे टांक नाग उनमान
चौहानी चौबीस बंटि कुल बासठ वंश प्रमाण,''

अर्थ : दस सूर्य वंशीय क्षत्रिय, दस चन्द्र वंशीय, बारह वंशी एवं चार अग्नि वंशीय, कुल छत्तीस क्षत्रिय वंशों का प्रमाण है। बाद में भौमबंश, नागवंश क्षत्रियों का सामना करने के बाद जब चौहान वंश चौबीस अलग-अलग वंशों में जाने लगा, तब क्षत्रियों के बासठ अंशों का प्रमाण मिलता है।

विनोद कुमार सिंह
संस्थापक अध्यक्ष
राजपूताना शौर्य फाउण्डेशन, लखनऊ
मो0/व्हाटस एप्पः 7054845169
ई-मेल : vinodksingh63@gmail.com

क्षत्रियों को सिंह लगाने की प्रथा

सम्मानित स्वजातीय बंधुओं ,

सादर प्रणाम

सिंह शब्द क्षत्रियों के नाम के अंत में लगाने की प्रथा है, परन्तु सिंह शब्द ही क्यों लगाया? क्या दूसरा शब्द नहीं था? इस विषय में कोई इतिहास मिलता है या नहीं , यह जानना आवश्यक है।

सिंह संस्कृत शब्द है। इसका अर्थ "वनराज'' (पशुओं का राजा) होता है। "राजा'' यानी राज्य करने वाला। जिसकी आज्ञा का सभी लोग पालन करते हों और वह सबसे श्रेष्ठ है। जिस प्रकार सिंह को बलवान से बलवान पशुओं में धाक बैठाने के कारण सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, उसी प्रकार क्षत्रियों को भी चार वर्णों में कर्म के हिस्से में राज्यों का संरक्षण और प्रजा का पालन करने का कर्तव्य सौंपा था। इसीलिए श्रेष्ठता सूचक "सिंह'' अपने नामों में लगाते हैं।

- महाभारत अथवा पुराणकालीन युग में ऐसा कोई नाम नहीं मिलता जिसके अंत में "सिंह'' शब्द लगाया गया हो।

  क्षत्रिय के उस समय के नामों को देखो – महाराजा रघु, जिनके रघुकुल में से श्री रामचन्द्रजी ने जन्म लिया। श्रीकृष्ण , युधिष्ठिर , अर्जुन, भीमसेन, ययाति, धृतराष्ट्र , दुर्योधन , हरिश्चंद , विक्रम , भोज इत्यादि हुए।

  इतिहास का प्रथम सिद्धांत, सबसे पहले "सिंह'' शब्द नाम "शाक्य सिंह'' बतलाता है। यह महाराज शाक्य के नाम से ही गौतम बुद्ध का नाम पड़ा था। यह बाद में भगवान बुद्ध कहलाये। इसी वजह से शाक्यों में श्रेष्ठ गौतम बुद्ध थे, इसके लिए अमर कोष के श्लोक–2 से सिद्ध होता है कि अपनी श्रेष्ठता और शक्ति के कारण "सिंह'' शब्द अंत में लगाया गया है , ऐसा माना जाता है।

दूसरी सदी की शुरूआत में गुजरात, काठियावाड़ , राजपूताना , मालवा, दक्षिण आदि देशों पर राज्य करने वाले मध्य एशिया (ईरान) की शाक्य जाति का क्षत्रबंशी राजा रूद्रदामना , दूसरा कुमार महाराजा रुद्सिंह के नाम के अंत में "सिंह'' शब्द पाया गया है। वि0स0 238 ई0स0 181 सं0 445 में होने वाले "रूद्र सिंह'' और "सत्य सिंह'' के नाम प्राचीन लेख और ताम्रपत्र तथा सिक्का मिल चुके हैं। इसके पीछे "सिंह'' नामांत का क्रम राजवंशों में प्रचलित हो गया।

सोलंकी क्षत्रियों में 'जयसिंह' नाम का एक राजा वि0सं0 534 में हो गया है। महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर ओझा कृत सोलंकियों के प्राचीन इतिहास में से इस संबंध में प्रमाण मिलते हैं।

विक्रम की 10वीं सदी में मालवा के "परमार' वरसिंह पहला और 12वीं सदी में गहलोत वंशीय महाराणा उदयपुर मेवाड़ के पूर्वज वैरा सिंह , विजय सिंह , वि0सं0 1273 में "अरि सिंह'' आदि का नाम मिलता है।

कच्छवाहों में नरवर ग्वालियर वाला राजा "गगन सिंह, शरद सिंह और वीर सिंह नामों में शब्दांत "सिंह शब्द है।

- कच्छवाहों के वि0सं0 1177 के कार्तिक बदी 30 रविवार का शिलालेख देखा हुआ है। (जनरल ऑफ अमेरिकन ओरिएण्टल सोसाइटी भाग–6 पृ0 142) मुगलकाल में "सिंह'' शब्द का प्रचार बढ़ गया था।
- राजपूतों के अलावा दूसरी जाति के लोग भी इस शब्द का प्रयोग करने लग गये हैं। "सिंह'' शब्द उस समय से उपाधि नहीं बल्कि बहादुरी के अर्थ में प्रचलित हो गया है। "सिंह'' जैसे बहादुर की तरह जब क्षत्रिय "सिंह'' शब्द नाम के पीछे लगाने लगे।
- राजपूतों के नाम के आगे सिंह , उनकी बहादुरी के कारण लगता था , न कि किसी की गुलामी के कारण या न किसी विदेशी की उपाधि देने के कारण जाना जाता है।

धन्यवाद

विनोद कुमार सिंह

राजपूताना शौर्य फाउंडेशन, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

क्षत्रिय

चार हुतासन सों भये कुल छत्तिस वंश प्रमाण
भौमवंश से धाकरे टांक नाग उनमान
चौहानी चौबीस बंटि कुल बासठ वंश प्रमाण."

अर्थ :- दस सूर्य वंशीय क्षत्रिय दस चन्द्र वंशीय,बारह ऋषि वंशी एवं चार अग्नि वंशीय कुल छत्तिस क्षत्रिय वंशों का प्रमाण है,बाद में भौमवंश नागवंश क्षत्रियों को सामने करने के बाद जब चौहान वंश चौबीस अलग अलग वंशों में जाने लगा तब क्षत्रियों के बासठ अंशों का प्रमाण मिलता है।

सूर्य वंश की दस शाखायें:-

१. कछवाह २. राठौड ३. बडगूजर ४. सिकरवार ५. सिसोदिया ६.गहलोत
७.गौर ८.गहरवार ९.बल्ला १०.वैस

चन्द्र वंश की दस शाखायें:-

१.जादौन २.भाटी ३.तोमर ४.चन्देल ५.छोंकर
६.झाला ७.सिलार ८.वनाफ़र ९.कटोच १०. सोमवंशी

अग्निवंश की चार शाखायें:-

१.चौहान २.सोलंकी ३.परिहार ४.पमार.

ऋषिवंश की बारह शाखायें:-

१.सेंगर २.दिक्खित ३.गर्गवंशी (हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त के वंशज) ४.दायमा ५.गौतम ६.अनवार (राजा जनक के वंशज) ७.दोनवार ८.दहिया (दधीचि ऋषि के वंशज) ९.चौपटखम्ब १०.काकन ११.शौनक १२.बिसैन

चौहान वंश की चौबीस शाखायें:-

१.हाडा २.खींची ३.सोनीगारा ४.पाविया ५.पुरबिया ६.संचौरा ७.मेलवाल ८.भदौरिया ९.निर्वाण १०.मलानी ११.धुरा १२.मडरेवा १३.सनीखेची १४.वारेछा १५.पसेरिया १६.बालेछा १७.रूसिया १८.चांदा १९.निकूम २०.भावर २१.छछेरिया २२.उजवानिया २३.देवडा २४.बनकर.

क्षत्रिय जातियो की सूची

क्रमांक	नाम	गोत्र	वंश	स्थान और जिला
१.	सूर्यवंशी	भारद्वाज	सूर्य	बुलन्दशहर आगरा मेरठ अलीगढ
२.	शौनक	शौन	भृगुवंशी	इलाहाबाद परगना मह
३.	सिसोदिया	बैजवापेड	गहलोत	महाराणा उदयपुर स्टेट
४.	कछवाहा	गौतम,वशिष्ठ,मानव	सूर्य	महाराजा जयपुर और ग्वालियर राज्य
५.	राठौड	गौतम, कश्यप, भार द्वाज,शान्डिल्य	गहरवार	महाराजा जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़ और पूर्व और मालवा
६.	सोमवंशी	अत्रय	चन्द्र	प्रतापगढ और जिला हरदोई
७.	यदुवंशी	अत्रय	चन्द्र	राज करौली राजपूताने में
८.	भाटी	अत्रय	जादौन	महरजा जैसलमेर राजपूताना
९.	जाडेजा	अत्रय	यदुवंशी	महाराजा कच्छ भुज
१०.	जादवा	अत्रय	जादौन	शाखा अवा. कोटला ऊमरगढ आगरा

११.	तोमर	अत्रय, व्याघ्र, गार्गेय	चन्द्र	पाटन के राव तंवरघार जिला ग्वालियर
१२.	कटियार	व्याघ्र	तोंवर	धरमपुर का राज और हरदोई
१३.	पालीवार	व्याघ्र	चन्द्र	गोरखपुर
१४.	सत्पोखरिया	भारद्वाज	राठौड(चाँपावत)	मऊ जिला घोसी
१५.	परिहार/बरगाही	कौशल्य	अग्नि	बांदा जिला
१६.	तखी	कौशल्य	परिहार	पंजाब कांगडा जालंधर जम्मू में
१७.	पंवार	वशिष्ठ	अग्नि	मालवा मेवाड धौलपुर पूर्व मे बलिया
१८.	सोलंकी	भारद्वाज	अग्नि	राजपूताना मालवा सोरों जिला एटा
१९.	चौहान	वत्स	अग्नि	राजपूताना पूर्व और सर्वत्र
२०.	हाडा	वत्स	चौहान	कोटा बूंदी और हाडौती देश
२१.	खींची	वत्स	चौहान	खींचीवाडा मालवा ग्वालियर
२२.	भदौरिया	वत्स	चौहान	नौगंवां पारना आगरा इटावा गालियर
२३.	देवडा	वत्स	चौहान	राजपूताना सिरोही राज
२४.	शम्भरी	वत्स	चौहान	नीमराणा रानी का रायपुर पंजाब
२५.	बच्छगोत्री	वत्स	चौहान	प्रतापगढ सुल्तानपुर
२६.	राजकुमार	वत्स	चौहान	दियरा कुडवार फ़तेहपुर जिला
२७.	पवैया	वत्स	चौहान	ग्वालियर
२८.	गौर, गौड	भारद्वाज	सूर्य	शिवगढ रायबरेली कानपुर लखनऊ
२९.	वैस	भारद्वाज	सूर्य	आजमगढ उन्नाव रायबरेली मैनपुरी पूर्व में
३०.	गहरवार	कश्यप	सूर्य	माडा हरदोई उन्नाव बांदा पूर्व

३१.	सेंगर	गौतम	ब्रह्मक्षत्रिय	जगम्बनपुर भरेह इटावा जालौन
३२.	कनपुरिया	भारद्वाज	ब्रह्मक्षत्रिय	पूर्व में राजाअवध के जिलों में हैं
३३.	बिसैन	अत्रय,वत्स,भारद्वाज,पाराशर, शान्डिल्य	ब्रह्मक्षत्रिय	गोरखपुर गोंडा प्रतापगढ में हैं
३४.	निकुम्भ	वशिष्ठ,भारद्वाज	सूर्य	मऊ गोरखपुर आजमगढ हरदोई जौनपुर
३५.	श्रीनेत	भारद्वाज	निकुम्भ	गाजीपुर बस्ती गोरखपुर
३६.	कटहरिया	वशिष्ठ्याभारद्वाज,	सूर्य	बरेली बंदायूं मुरादाबाद शहाजहांपुर
३७.	वाच्छिल	अत्रयवच्छिल	चन्द्र	मथुरा बुलन्दशहर शाहजहांपुर
३८.	बढगूजर	वशिष्ठ	सूर्य	अनूपशहर एटा अलीगढ मैनपुरी मुरादाबाद हिसार गुडगांव जयपुर
३९.	झाला	मरीच, कश्यप, मार्कण्डे	चन्द्र	धागधरा मेवाड झालावाड कोटा
४०.	गौतम	गौतम	ब्रह्म क्षत्रिय	राजा अर्गल फ़तेहपुर
४१.	रैकवार	भारद्वाज	सूर्य	बहरायच सीतापुर बाराबंकी
४२.	करचुल हैहय	कृष्णात्रेय	चन्द्र	बलिया फ़ैजाबाद अवध
४३.	चन्देल	चान्द्रायन	चन्द्रवंशी	गिद्धौर ,कानपुर, फ़र्रुखाबाद , बुन्देलखंड, पंजाब, गुजरात
४४.	जनवार	कौशल्य	चन्द्रवंशी	बलरामपुर अवध के जिलों में
४५.	बहरेलिया	भारद्वाज	वैस की गोद सिसोदिया	रायबरेली बाराबंकी
४६.	दीत्तत	कश्यप	सूर्यवंश की शाखा	उन्नाव, बस्ती, प्रतापगढ, जौनपुर, रायबरेली ,बांदा
४७.	सिलार	शौनिक	चन्द्र	सूरत राजपूतानी
४८.	सिकरवार	भारद्वाज	बढगूजर	ग्वालियर, आगरा और उत्तरप्रदेश में

४९.	सुरवार	गर्ग	सूर्य	कठियावाड में
५०.	सुर्वैया	वशिष्ठ	यदुवंश	काठियावाड
५१.	मोरी	ब्रह्मगौतम	सूर्य	मथुरा ,आगरा ,धौलपुर
५२.	टांक (तत्तक)	शौनिक	नागवंश	मैनपुरी और पंजाब
५३.	गुप्त	गार्ग्य	चन्द्र	अब इस वंश का पता नही है
५४.	कौशिक	कौशिक	चन्द्र	बलिया, आजमगढ, गोरखपुर
५५.	भृगुवंशी	भार्गव	ब्रह्म क्षत्रिय	वनारस, बलिया, आजमगढ, गोरखपुर
५६.	गर्गवंशी	गर्ग	ब्रह्म क्षत्रिय	आजमगढ, नरसिंहपुर सुल्तानपुर,अवध,बस्ती,फैजाबाद
५७.	पडियारिया,	देवल,सांकृतसाम	ब्रह्म क्षत्रिय	राजपूताना
५८.	ननवग	कौशल्य	चन्द्र	जौनपुर जिला
५९.	वनाफ़र	पाराशर,कश्यप	चन्द्र	बुन्देलखन्ड बांदा वनारस
६०.	जैसवार	कश्यप	यदुवंशी	मिर्जापुर एटा मैनपुरी
६१.	चौलवंश	भारद्वाज	सूर्य	दक्षिण मद्रास तमिलनाडु कर्नाटक में
६२.	निमवंशी	कश्यप	सूर्य	संयुक्त प्रांत
६३.	वैनवंशी	वैन्य	सोमवंशी	मिर्जापुर
६४.	दाहिमा	गार्गेय	ब्रह्म क्षत्रिय	काठियावाड राजपूताना
६५.	पुण्डीर	कपिल	ब्रह्म क्षत्रिय	पंजाब गुजरात रींवा यू.पी.
६६.	तुलवा	अत्रय	चन्द्र	राजाविजयनगर
६७.	कटोच	कश्यप	चन्द्र	राजानादौन कोटकांगडा
६८.	चावडा,पंवार,चोहान,वर्तमान कुमावत	वशिष्ठ	पंवार की शाखा	मलवा रतलाम उज्जैन गुजरात मेवाड
६९.	अहवन	वशिष्ठ	चावडा,कुमावत	खेरी हरदोई सीतापुर बारांबंकी

७०.	डौडिया	वशिष्ठ	पंवार शाखा	बुलंदशहर मुरादाबाद बांदा मेवाड गल्वा पंजाब
७१.	गोहिल	बैजबापेण	गहलोत शाखा	काठियावाड
७२.	बुन्देला	कश्यप	गहरवारशाखा	बुन्देलखंड के रजवाडे
७३.	काठी	कश्यप	गहरवारशाखा	काठियावाड झांसी बांदा
७४.	जोहिया	पाराशर	चन्द्र	पंजाब देश मे
७५.	गढावंशी	कांवायन	चन्द्र	गढावाडी के लिंगपट्टम में
७६.	मौखरी	अत्रय	चन्द्र	प्राचीन राजवंश था
७७.	लिच्छिवी	कश्यप	सूर्य	प्राचीन राजवंश था
७८.	बाकाटक	विष्णुवर्धन	सूर्य	अब पता नहीं चलता है
७९.	पाल	कश्यप	सूर्य	यह वंश सम्पूर्ण भारत में बिखर गया है
८०.	सैन	अत्रय	ब्रह्मक्षत्रिय	यह वंश भी भारत में बिखर गया है
८१.	कदम्ब	मान्डग्य	ब्रह्म क्षत्रिय	दक्षिण महाराष्ट्र मे हैं
८२.	पोलच	भारद्वाज	ब्रह्म क्षत्रिय	दक्षिण में मराठा के पास में है
८३.	बाणवंश	कश्यप	असुरवंश	श्री लंका और दक्षिण भारत में,कैन्या जावा में
८४.	काकुतीय	भारद्वाज	चन्द्र, प्राचीन सूर्य था	अब पता नही मिलता है
८५.	सुणग वंश	भारद्वाज	चन्द्र, प्राचीन सूर्य था,	अब पता नही मिलता है
८६.	दहिया	गौतम	ब्रह्म क्षत्रिय	मारवाड में जोधपुर
८७.	जेठवा	कश्यप	हनुमानवंशी	राजधूमली काठियावाड
८८.	मोहिल	वत्स	चौहान शाखा	महाराष्ट्र मे है

८९.	बल्ला	भारद्वाज,कश्यप	सूर्य	काठियावाड मे मिलते हैं
९०.	डाबी	वशिष्ठ	यदुवंश	राजस्थान
९१.	खरवड	वशिष्ठ	यदुवंश	मेवाड उदयपुर
९२.	सुकेत	भारद्वाज	गौड की शाखा	पंजाब में पहाडी राजा
९३.	पांड्य	अत्रय	चन्द	अब इस वंश का पता नहीं
९४.	पठानिया	पाराशर	वनाफ़रशाखा	पठानकोट राजा पंजाब
९५.	बमटेला	शांडल्य	विसेन शाखा	हरदोई फ़र्रुखाबाद
९६.	बारहगैया	वत्स	चौहान	गाजीपुर
९७.	भैंसोलिया	वत्स	चौहान	भैंसोल गाग सुल्तानपुर
९८.	चन्दोसिया	भारद्वाज	वैस	सुल्तानपुर
९९.	चौपटखम्ब	कश्यप	ब्रह्मक्षत्रिय	जौनपुर
१००.	धाकरे	भारद्वाज(भृगु)	ब्रह्मक्षत्रिय	आगरा ,मथ्ररा, मैनप्ररी ,इटावा हरदोई, बुलन्दशहर
१०१.	धन्वस्त	यमदाग्नि	ब्रह्म क्षत्रिय	जौनपुर आजमगढ वनारस
१०२.	धेकाहा	कश्यप	पंवार की शाखा	भोजपुर शाहाबाद
१०३.	दोबर (दोनवार)	वत्स या कश्यप	ब्रह्म क्षत्रिय	गाजीपुर बलिया आजमगढ गोरखपुर
१०४.	हरद्वार	भार्गव	चन्द्र शाखा	आजमगढ
१०५.	जायस	कश्यप	राठौड की शाखा	रायबरेली मथुरा
१०६.	जरोलिया	व्याघ्रपद	चन्द्र शाखा	बुलन्दशहर
१०७.	जसावत	मानव्य	कछवाह शाखा	मथुरा आगरा
१०८.	जोतियाना (भुटियाना	मानव्य	कश्यप, कछवाह शाखा	मुजफ़्फ़रनगर मेरठ

१०९.	घोडेवाहा	मानव्य	कछवाह शाखा	लुधियाना ,होशियारपुर, जालन्धर
११०.	कछनिया	शान्डिल्य	ब्रह्मक्षत्रिय	अवध के जिलों में
१११.	काकन	भृगु	ब्रह्म क्षत्रिय	गाजीपुर आजमगढ
११२.	कासिब	कश्यप	कछवाह शाखा	शाहजहांपुर
११३.	किनवार	कश्यप	सेंगर की शाखा	पूर्व बंगाल और बिहार में
११४.	बरहिया	गौतम	सेंगर की शाखा	पूर्व बंगाल और बिहार
११५.	लौतमिया	भारद्वाज	बढगूजर शाखा	बलिया गाजी पुर शाहाबाद
११६.	मौनस	मौन	कछवाह शाखा	मिर्जापुर प्रयाग जौनपुर
११७.	नगबक	मानव्य	कछवाह शाखा	जौनपुर आजमगढ मिर्जापुर
११८.	पलवार	व्याघ्र	सोमवंशी शाखा	आजमगढ फ़ैजाबाद गोरखपुर
११९.	रायजादे	पाराशर	चन्द्र की शाखा	पूर्व अवध में
१२०.	सिंहेल	कश्यप	सूर्य	आजमगढ परगना मोहम्दाबाद
१२१.	तरकड	कश्यप	दिक्खित शाखा	आगरा मथुरा
१२२.	तिसहिया	कौशल्य	परिहार	इलाहाबाद परगना हंडिया
१२३.	तिरोता	कश्यप	तंवर की शाखा	आरा शाहाबाद भोजपुर
१२४.	उदमतिया	वत्स	ब्रह्मक्षत्रिय	आजमगढ गोरखपुर
१२५.	भाले	वशिष्ठ	पंवार	अलीगढ
१२६.	भालेसुल्तान	भारद्वाज	वैस की शाखा	रायबरेली लखनऊ उन्नाव
१२७.	जैवार	व्याघ्र	तंवर की शाखा	दतिया, झांसी बुन्देलखंड
१२८.	सरगैयां	व्याघ्र	सोमवंश	हमीरपुर बुन्देलखण्ड
१२९.	किसनातिल	अत्रय	तोमरशाखा	दतिया बुन्देलखंड
१३०.	टडैया	भारद्वाज	सोलंकी शाखा	झांसी ,ललितपुर ,बुन्देलखंड

१३1.	लोध/लोधी	अत्रय	चन्द्रवंशी	लुधिआना (पंजाब), हिंडोरिया (दमोह), लोद्रवा (राजस्थान) उज्जेन, इटावा, रामगढ़ (मंडला म0प्र0), चरखारी, हीरागढ़, हटरी
१३२.	पिपरिया	भारद्वाज	गौडों की शाखा	बुन्देलखंड
१३३.	सिरसवार	अत्रय	चन्द्र शाखा	बुन्देलखंड
१३४.	खींचर	वत्स	चौहान शाखा	फ़तेहपुर में असौथड राज्य
१३५.	खाती	कश्यप	दिक्खित शाखा	बुन्देलखंड, राजस्थान में कम संख्या होने के कारण इन्हे बढई गिना जाने लगा
१३६.	आहडिया	बैजवापेण	गहलोत	आजमगढ
१३७.	उदावत	गौतम	राठौड	पाली
१३८.	उजैने	वशिष्ठ	पंवार	आरा डमरिया
१३९.	अमेठिया	भारद्वाज	गौड	अमेठी, लखनऊ ,सीतापुर
१४०.	दुर्गवंशी	कश्यप	दिक्खित	राजा जौनपुर ,राजाबाजार
१४१.	बिलखरिया	कश्यप	दिक्खित	प्रतापग
१४२.	रंघुवंशी	कश्यप	सूर्य	जौनपुर डोभी, काशी, चन्दौली
१४३.	चंद	कौशिक	कौशिक	गोरखपुर मंडल
१४४.	कलहंस,	अंगिरस		गोण्डा, बस्ती,बलरामपुर ,बहराइच , गोरखपुर

क्षत्रिय कुलदेवियाँ

तँवर की कुलदेवी :
श्री चिलाया माता (झंझेऊ, बीकानेर)

दहिया वंश की कुलदेवी :
श्री कैवाय माता (किणसरिया)

कछवाहा वंश की कुल देवी :
श्री जमवाय माता (जमवारामगढ़)

चौहान वंश की कुल देवी :
श्री आशापुरा माता (नाडोल़)

क्षत्रिय
कुलदेवियों के नाम

- गहलौत , सिसोंदिया -- श्री बाणेश्वरी माता
- राठौर -- श्री नागणेच्या माता
- कछवाह -- श्री जमवाय माता
- चौहान -- श्री आशापूर्णा माता
- भदौरिया -- श्री कालिका माता
- जादौन -- श्री योगेश्वरी माता (माँ कैला देवी, करौली)
- भाटी -- श्री भादरिया माता
- जडेजा -- श्री आशापुरा माता
- तौमर (तंवर) -- श्री चिलाय माता
- झाला -- श्री शक्ति माता
- परमार -- श्री सच्चिवाय माता
- सोलंकी -- श्री खींवज माता
- सेंगर -- श्री विन्ध्यवासिनी माता
- चूडासमा -- श्री अम्बा भवानी माता
- परिहार -- श्री योगेश्वरी माता
- भोसले -- श्रीजगदम्बा माता (तुलजा भवानी)
- सिकरवार -- श्री दुर्गा माता
- बुन्देला -- श्री अन्नपूर्णा माता
- चंदेल -- श्री मेनिया माता
- बडगूजर -- श्री कालिका माँ
- बनाफर -- श्री शारदा माता
- सोमवंशी -- श्री महा लक्ष्मी माता
- खंगार -- श्री गजानन माता
- विसेन -- श्री दुर्गा माता
- गौड -- श्री महाकाली माता
- दहिया -- श्री केवाय माता
- रावत -- श्री चण्डी माता
- बैस -- श्री कालिका माता
- गौतम -- श्री चामुण्डा देवी
- कौशिक -- श्री योगेश्वरी माता
- रघुवंशी -- काली माता

स्वजनों

सदियों से चली आ रही इस देश में वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था में 'राजपूत' शब्द का अपना विशिष्ट स्थान रहा है सदियों से देश में, समाज में, और जनता ने जो विश्वास 'राजपूत' पर किया है उसका भरपूर साथ 'राजपूत' ने दिया एवं बड़े से बड़ा बलिदान और 'सर्वस्व न्योछावर' कर के अपना दायित्व और कर्तव्य पूरा किया है!

'पिता के सामने पुत्र, पुत्र के सामने पिता, एवं भाई के सामने भाई, और साले के सामने जीजा का सिर युद्ध भूमि में कटते हुए राजपूत के अलावा और किस जाति ने देखा है ?हल्दीघाटी के युद्ध में तो 'चंबल घाटी के शेर' ग्वालियर के राजा राम शाह तोमर ने तो अपने तीन पुत्रों और एक 16 वर्षीय पौते सहित एक साथ, एक ही दिन एक ही स्थान पर, तीन पीढ़ियों ने बलिदान दिया है! इस देश ही नहीं, दुनिया में राष्ट्र के लिए ऐसे बलिदान का उदाहरण कोई देश या कोई जाति दे सकती है क्या ?

'पिता के सामने पुत्री ,भाई के सामने बहन ,भाभी के सामने ननंद, और मां के सामने बेटी एवं बहन के सामने बहन को अग्निस्नान' अर्थात जोहर - करते हुए और किस जाति की महिला ने देखा है? देश में राजपूत के अलावा किस जाति की महिलाओं ने जौहर किया है, हे कोई ऐसा उदाहरण जो राजपूत वीरांगनाओं के बलिदान की बराबरी कर सकें, अरे बराबरी तो दूर बलिदान को छू भी सके ?

'देश की आजादी के बाद शासन व्यवस्था बदल गई जिनके पूर्वजों ने और स्वयं जिन्होंने बिना कुछ खोए, और बिना कोई त्याग और बलिदान किए, बिना कष्ट और मुसीबतें देखें ,नई व्यवस्था में 'सत्ता की भागीदारी' प्राप्त कर ली, वह सत्ता के नशे में चूर हो गए हैं! 'शासन सेवा के लिए होता है' चाणक्य के इस 'मूलमंत्र' को भूल कर ष्सत्ता द्वारा मेवाष खाने में लगे हैं ऐसे सत्ता लोलुप लोगो के स्वार्थ एवं मतलब परस्ती और जातिवाद के घृणित खेल के चलते जनता और देश के साथ खिलवाड़ हो रहा है इसकी किसी को कोई चिंता नहीं है

'इस्लाम समर्थक' और 'जिहादी' सोच ने पूरे देश को चारों ओर से जकड़ लिया है! लेकिन राष्ट्र विरोधी शक्तियां अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के चलते कहीं प्रत्यक्ष ,तो कहीं अप्रत्यक्ष रूप से या तो चुप है या इन शक्तियों को नैतिक समर्थन दे रही है

'राजपूत एक ऐसी , जाति है जो राष्ट्रवाद की कट्टर समर्थक है, देशभक्ति राजपूत की नस नस में कूट-कूट कर भरी है, देश के लिए सर्वस्व बलिदान को हमेशा तैयार रहने वाली राजपूत जाति का हर सदस्य समय आने पर देश के लिए सर्वस्व निछावर करने को

तैयार हो जाता है 'राजपूतों की राष्ट्र के प्रति समर्पण और राष्ट्र वाद पर सर्वस्व न्योछावर करने की भावना, राजपूतों की यही सोच, यही नीति, स्वार्थ तत्वों को, राष्ट्र को कमजोर करने और सत्ता का सुख भोगने वालों को चुभती है! और इसी कारण अपने मतलब के चलते देश कमजोर बने तो बने रक्षा करने वालों को कमजोर बनाओ की नीति पर चलते हुए पिछले अनेक वर्षों से राजपूतों को 'टारगेट' किया जा रहा है, उनके इतिहास के साथ छेड़छाड़ की जा रही है ,और प्रभावशाली ताकते छेड़छाड़ करने वालों को अप्रत्यक्ष समर्थन कर रही है !आमजन में राजपूत की इज्जत और प्रतिष्ठा, मान और सम्मान कैसे कम किया जा सके इसके लिए बराबर प्रयास किया जा रहा है जो कदापि देश हित में नहीं होगा!

'लेकिन जो कुछ किया जा रहा है वह राजपूतों का न कुछ बिगाड़ पा रहा है ना कुछ बिगाड़ पाएगा, लेकिन देश एवं हिंदू समाज को राजपूत विरोधी यह नीति ऐसे अंधेरे कुएं की ओर धकेल देगी जिससे बाहर निकलना कठिन ही नहीं असंभव होगा यह लिखूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी? मेरी बात की पुष्टि के लिए इतना ही लिखूंगा की 'भस्मासुर ' की कहानी पढ़ लेना और मध्य काल का इतिहास पढ़ कर स्पष्ट हो जाना कि सातवीं शताब्दी से 17 वीं शताब्दी तक अर्थात 1000 वर्ष राजपूत की देशभक्ति, राजपूत का राष्ट्रवाद, राजपूत की वीरता, उसकी शौर्यता, दबंगता एवं बहादुरी और बलिदान से 'राजपूत की तलवार' ने इस देश कोष इस्लामिक राष्ट्र या 'गजवा ए हिंद' बनने से रोक लिया है !

'राजपूतो के इतिहास से छेड़छाड़ और राजपूत विरोधी नीति कहीं राष्ट्र विरोधी और हिंदू विरोधी नीति सिद्ध नहीं हो जाए कि बाद में पछतावे के अलावा और कुछ ना मिले !

और तब दर्शन शास्त्री कहेंगे 'अब पछताए होत का जब चिड़िया चुग गई खेत' और , मेरे विचार के अनुसार इस देश के , 'दिल'राजपूत भाइयों अपने आप को पहचानो अपनी शक्ति को जानो और घटिया मानसिकता से ऊपर उठकर एक के पीछे एक अर्थात 11 बनकर अपनी शक्ति का एहसास कराओ यही सोच इस देश के हित में और जनता के हित में होगी और हमारा देश सर्वोपरि राष्ट्र बनेगा।

धन्यवाद

'विनोद कुमार सिंह'
लखनऊ
मो0 :7054845169

क्षत्रिय वंश गौरव

शौर्य वैवाहिक सूचना मंच

स्वजातीय बंधुओ

- वैवाहिक संस्कार का समय निकट है विवाह योग्य युवक–युवती के पालक/परिजन ,अभिभावक अच्छे रिश्तों की तलाश में लगे हुए है।
- भाईयो बहनो हम अपने परिवार रिश्तेदार,दोस्त या परिचित के ऐसे युवक–युवती जिनकी उम्र विवाह योग्य हो चुकी है की विस्तृत जानकारी परिणय बायोडाटा,फोटो, सहित जिसमे मोबाइल नम्बर,ईमेल आई डी भी होना चाहिए।
- शौर्य वैवाहिक सूचना मंच के व्हाट्सएप ग्रुप नम्बर – 7054845169 पर पोस्ट कर जुड सकते है जिसे हम ग्रुप में पोस्ट कर आपको ग्रुप मे जोड देंगे, जिससे आवश्यकता अनुसार पहले से ग्रुप में जुडे हुये अन्य राजपुत भाई/परिवारो को जानकारी हो जायेगी।
- वे स्वयं आप,आपके परिजन से संपर्क कर विवाह हेतु आपस मे बातचीत कर बच्चों के रिश्ते सुनिश्चित कर लेंगे।
- इस शौर्य वैवाहिक सूचना मंच से जुडने के लिये क्षत्रिय समाजहित में कार्यरत बंधु का रिफरेंस आवश्यक है जिससे क्षत्रियों की शुद्धता की पहचान सम्भव हो सके ।
- हमारा ये छोटा सा प्रयास ही शायद किस राजपूत परिवार की बड़ी मदद कर जाये।

संचालक

विनोद कुमार सिंह

लखनऊ

शुभकामनाओं के साथ..

जय राजपुताना